नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

सेवा क्षेत्र की रफ्तार और भारतीय अर्थव्यवस्था

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए यह राहत और भरोसे दोनों की खबर है कि देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर अप्रैल में बढ़कर पांच महीने के उच्च स्तर 58.8 पर पहुंच गई है. एचएसबीसी इंडिया सेवा पीएमआई (परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स) का मार्च के 57.5 से बढ़कर अप्रैल में 58.8 तक पहुंचना केवल एक सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं, बल्कि यह संकेत है कि वैश्विक अनिश्चितताओं और भू-राजनीतिक तनावों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था की आंतरिक मांग अब भी मजबूत बनी हुई है.

दरअसल, भारत की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की भूमिका लगातार निर्णायक होती जा रही है. सूचना प्रौद्योगिकी, ई-कॉमर्स, लॉजिस्टिक्स, बैंकिंग, पर्यटन, स्वास्थ्य और पेशेवर सेवाओं जैसे क्षेत्रों ने पिछले एक दशक में भारतीय विकास मॉडल को नई दिशा दी है. अप्रैल के आंकड़े बताते हैं कि नए ऑर्डर और उत्पादन में तेज वृद्धि ने इस क्षेत्र को नई ऊर्जा दी है. विशेष रूप से ई-कॉमर्स, रिलोकेशन और लॉजिस्टिक्स सेवाओं की बढ़ती मांग यह संकेत देती है कि घरेलू बाजार में उपभोग और व्यावसायिक गतिविधियां तेज बनी हुई हैं.

यह भी महत्वपूर्ण है कि सेवा क्षेत्र की यह मजबूती ऐसे समय में सामने आई है, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था कई प्रकार की चुनौतियों से जूझ रही है. पश्चिम एशिया में जारी युद्ध, आपूर्ति श्रृंखलाओं पर दबाव, पर्यटन क्षेत्र की सुस्ती और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अनिश्चितता का असर भारतीय सेवाओं की विदेशी मांग पर भी दिखाई दिया है. सर्वे में शामिल कंपनियों ने स्पष्ट रूप से माना कि अंतरराष्ट्रीय मांग अपेक्षाकृत कमजोर रही. इसका अर्थ यह है कि भारत की वर्तमान सेवा क्षेत्रीय मजबूती का मुख्य आधार घरेलू मांग और आंतरिक आर्थिक गतिविधियां हैं. दरअसल, यही भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत भी बनकर उभर रही है. लंबे समय तक भारत को निर्यात आधारित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कमजोर माना जाता था, लेकिन अब देश का विशाल उपभोक्ता बाजार विकास का स्थायी आधार बनता दिखाई दे रहा है. भारत में बढ़ता मध्यम वर्ग, डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार और तेजी से बदलती उपभोग संस्कृति सेवा क्षेत्र को निरंतर गति दे रही है.

हालांकि तस्वीर पूरी तरह चिंता मुक्त नहीं है. कंपनियों ने खाद्य पदार्थों, गैस, श्रम लागत और गैस की कमी के कारण परिचालन खर्चों में उल्लेखनीय वृद्धि की बात कही है. मुद्रास्फीति की दर में कुछ कमी आने के बावजूद लागत का दबाव अभी भी ऊंचे स्तर पर बना हुआ है. इसका सीधा असर कंपनियों के लाभ, निवेश योजनाओं और रोजगार सृजन पर पड़ सकता है. यदि लागत में यह वृद्धि लंबे समय तक जारी रहती है, तो सेवा क्षेत्र की वर्तमान तेजी पर दबाव बन सकता है. इसके बावजूद एचएसबीसी इंडिया समग्र पीएमआई उत्पादन सूचकांक का 58.2 तक पहुंचना यह दर्शाता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी विस्तार के मजबूत चरण में है. यह संकेत निवेशकों के लिए भी सकारात्मक है, क्योंकि आर्थिक गतिविधियों में निरंतर वृद्धि निवेश वातावरण को स्थिरता प्रदान करती है.

असल प्रश्न अब यह है कि क्या भारत इस गति को लंबे समय तक बनाए रख पाएगा? इसके लिए केवल मांग बढ़ना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि बुनियादी ढांचे, ऊर्जा आपूर्ति, लॉजिस्टिक्स दक्षता और कौशल विकास पर भी समान रूप से ध्यान देना होगा. वैश्विक अस्थिरता के इस दौर में भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि वह अपनी घरेलू आर्थिक ताकत को टिकाऊ विकास मॉडल में बदल सके. फिलहाल इतना स्पष्ट है कि सेवा क्षेत्र की यह तेजी भारतीय अर्थव्यवस्था के आत्मविश्वास का प्रतीक है. यह बताती है कि दुनिया की अनिश्चितताओं के बीच भी भारत की विकास यात्रा अभी थमी नहीं है.

पश्चिम बंगाल : परिवर्तन के साथ पुनर्जागरण

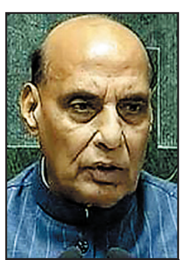

श्री राजनाथ सिंह

'हे नूतन, देखा दिक आर-बार, जन्मेरो प्रथम शुभोखोन'

(हे नवीन, एक बार फिर से सामने आओ, ठीक उसी तरह जैसे जन्म के समय वह पहला शुभ क्षण आया था।)

> बेलूर मठ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आत्मिक जुड़ाव, स्वामी विवेकानंद के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा और सुशासन को 'सेवा' के रूप में देखने का उनका दृष्टिकोण — ये सभी इस बात के प्रमाण हैं कि 'प्रधान सेवक' बंगाल के विकास और पुनर्जागरण को एक पावन दायित्व मानते हैं, जिसे वे अपने 'प्रधान धर्म' और 'प्रधान कर्म' के रूप में निभा रहे हैं। इसलिए बंगाल के विकास और पुनर्निर्माण का अर्थ कई दशकों से उपेक्षित और जीर्ण-शीर्ण हो चुके इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण तो है ही, साथ ही इसका अर्थ उन घाटों को पुनर्जीवित करना भी है जहाँ चैतन्य महाप्रभु के कीर्तन ने लोगों को भाव-विभोर किया था। इसका अर्थ उन शैक्षणिक संस्थानों को सशक्त करना भी है जिनका स्वप्न ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने देखा था। इसका अर्थ उन आदिवासी भाइयों-बहनों को गरिमा, सम्मान और अवसर देना भी है जो सदियों से बंगाल में रहते आए हैं। इसका अर्थ लंबे समय से उपेक्षा झेल रहे पर्वतीय क्षेत्रों के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना भी है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की यह पंक्तियाँ केवल एक कविता का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि समय-समय पर स्वत: स्फूर्त और नवीन होने वाली बंगाल की आत्मा का आह्वान भी हैं। गुरुदेव भली-भाँति समझते थे कि बंगाल समय के साथ केवल बदलता नहीं है, बल्कि वह बार-बार बेहतर और नए रूप में पल्लवित होता है। गुरुदेव की जयंती पर गायी जाने वाली यह कविता नवजागरण और नवचेतना की प्रतीक है। यह प्रार्थना पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर, नए, उज्ज्वल और रचनात्मक विचारों के स्वागत का आह्वान भी है।

यह एक सुखद संयोग है कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 165वीं जयंती से कुछ दिन पहले ही, पश्चिम बंगाल कई दशकों के बाद नवजागरण का साक्षी बना है। 4 मई को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई है। लेकिन भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए यह चुनाव कभी सिर्फ एक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा नहीं था। यह चुनाव इस महान भूमि के खोए हुए गौरव को पुनर्स्थापित करने का एक अवसर था—एक ऐसा सभ्यतागत आह्वान, जो चुनावी समीकरणों और गणनाओं से कहीं ऊपर है।

आज जब पश्चिम बंगाल की चेतना और गौरव का अरुणोदय हो रहा है, तो हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि बंगाल क्या है और बंगाल की चेतना का पुनर्जागरण किसे कहा जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है बंगाल की शताब्दियों पुरानी चेतना को समझना और जानना।

बंगाल सामाजिक चेतना का केंद्र होने से पहले ज्ञान और आध्यात्मिकता की पवित्र भूमि थी। 15वीं शताब्दी में नवद्वीप के गंगा तट पर एक युवा संन्यासी निमाई ने अपने कीर्तन के माध्यम से समाज को नई दिशा दी। उस युवा संन्यासी को आज हम आदि संत चैतन्य महाप्रभु के नाम से जानते हैं। चैतन्य महाप्रभु के द्वारा दिखाया गया भक्ति मार्ग आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने के साथ-साथ सामाजिक समरसता का अभियान भी था। चैतन्य महाप्रभु ने जात-पात और ऊँच-नीच के बंधनों को तोड़ा। उनके द्वारा प्रवाहित वैष्णव परंपरा ने समाज में करुणा, समावेशिता, समता और सद्भावना को बल दिया। यही चेतना बाउल परंपरा में भी दिखाई दी। बाउल परंपरा के फकीरों की पहचान जाति, धर्म या कोई ग्रंथ नहीं, बल्कि मानवता की भावना थी। बाउल परंपरा के सबसे महान प्रवर्तक लालन फकीर थे। वे किस संप्रदाय से थे, यह प्रश्न कभी महत्वपूर्ण नहीं रहा। उन्होंने हिंदू समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था का भी विरोध किया तथा मुस्लिम समाज में होने वाले भेदभाव के खिलाफ भी आवाज उठायी। वे बंगाल की उस सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक थे, जिसमें सहिष्णुता और सह-अस्तित्व का भाव समाहित था। विगत तीन शताब्दियों में, बंगाल और बंगाल के लोगों ने केवल भारत के सामाजिक नवजागरण आंदोलन में भाग ही नहीं लिया, बल्कि उसका नेतृत्व भी किया। जब समाज अपनी जड़ता, कुरीतियों और विकृत परंपराओं के बोझ तले दब चुका था, तब राजा राममोहन राय ने न तो परंपरा का समूल रूप से परित्याग किया और न ही तर्कशून्य तरीके से उसको उचित ठहराया। उन्होंने लोगों को आत्मबोध कराकर, समाज को भीतर से सुधारने का मार्ग चुना। उनका संदेश स्पष्ट था — समाज का पुनर्जन्म बाहर से नहीं, भीतर की चेतना से होता है। सती प्रथा जैसी अमानवीय कुरीति के विरुद्ध उनका संघर्ष केवल समाज सुधार से जुड़ा आंदोलन नहीं था, बल्कि भारतीय आत्मा को पुनर्जीवित करने का एक तप था। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि मुक्ति का मंत्र बना दिया। उन्होंने शिक्षा को नारी शक्ति के उत्थान, सशक्तिकरण और मुक्ति का साधन बना दिया। बंगाल के ही बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 'वंदे मातरम्' जैसा अमर मंत्र राष्ट्र को दिया। वंदे मातरम् वह गीत था जिसने ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ने में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को बल दिया और सदियों से सोये हुए देश को जगा दिया।

(लेखक भारत सरकार में रक्षा मंत्री हैं।)

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव विश्लेषण

सत्ता की असली चाबी मतदाताओं के पास

सीए अखिलेश जैन

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद ..... न केवल धन्यवाद, बारम्बार धन्यवाद, हार्दिक बधाइयाँ आपके दूरदृष्टिपूर्ण, साहसिक सुविचारित व स्पष्ट जनादेश के लिए, एक बार फिर से बधाई व धन्यवाद, वास्तव में पश्चिम बंगाल की माताओं, बहनों, बेटियों, मतदाताओं, कार्यकर्ताओं, चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने में जी-जान से जुटे शासकीय अधिकारियों, कर्मचारियों, चुनाव आयोग, सुरक्षा बलों, न्याय का झण्डा बुलन्द कर लोकतंत्र को जड़ों को मजबूती प्रदान करने वाले ज्ञात/अज्ञात सभी महानुभावों, विशिष्ट जनों, दैवीय शक्तियों के साथ-साथ भारत के संविधान निर्माताओं को जिन्होंने सत्ता को असली चाबी मतदाताओं को सोंपी है.

विवेकपूर्ण, साहासिक व दूरदृष्टिपूर्ण निर्णय कि जितनी भी प्रशंसा की जावे वो छोटी ही प्रतीत होती है. जब सत्ता की असली बागड़ोर संविधान निर्माताओं ने मतदाताओं को सौंपी है, तो जिस प्रकार हर अंधेरी रात की समय-सीमा समाप्ति के साथ-साथ सूर्योदय निश्चित है उसी प्रकार निरंकुश, अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, दुराचारी, सनातन विरोधी, माताओं-बहनों -बेटियों, जो साक्षात् देवी रूप हैं, को सुरक्षा प्रदान करने में अक्षम, लोकतंत्र का उपहास उड़ाने वाली, देश की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक प्रगति में बाधक सत्ता का अन्त होना भी सुनिश्चित ही था. चुनाव प्रारम्भ होने की बेला से चुनाव आयोग की चुनाव सम्पन्न होने की अधिसूचना जारी होने तक का मतदाताओं, कार्यकर्ताओं का समीप से अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ, मतदाताओं, कार्यकर्ताओं की मानसिक स्थिति को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ. मतदाताओं, कार्यकर्ताओं से संवाद में चुनाव परिणामों की तस्वीर स्पष्ट परिलक्षित हो रही थी, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मतदान की तिथि तक का समय एक कल्प की तरह लम्बा लग रहा है.

इतनी बेसब्री मतदान के लिए, 90 प्रतिशत से अधिक का मतदान, ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे मतदाताओं में मतदान की होड़ लग गई हो, देश-विदेश में बैठे पश्चिम बंगाल के मतदाता लाईन लगाकर, बेखौफ, मतदान के लिए जोश, जुनुन के साथ लाईन में लग गये, 40 डिग्री सेंटीग्रेट का तापमान पर महिलाओं ने शत-प्रतिशत मतदान का निर्णय कर लिया. चाहे शहर हो, देहात हो, छोटा सा गांव, कस्बा, सूदूर जंगल में छोटी सी बस्ती हो, हर जगह शत-प्रतिशत मतदान की होड़ लगी थी, अगर आप इस मतदान के जोश की भावनाओं को समझ सकें तो चुनाव परिणाम मतदान की लाईन देखने मात्र से ही स्पष्ट था. मतदाताओं में राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी के प्रति विद्रोह, आक्रोश की ज्वाला धधक रही थी, जो उन्होंने मतदान शत-प्रतिशत करने को ठान कर अपने अन्तर्मन की ज्वाला को शान्त करने का मार्ग बनाया. ऐसा क्यों?

> केन्द्रीय योजनाओं के लिए ममता सरकार दरवाजे बंद कर चुकी थी, इस प्रकार के प्रश्नों से न केवल पश्चिम बंगाल का नुकसान हो रहा था, बल्कि जिस तरह शरीर का कोई एक अंग बीमार हो जावे तो पूरा शरीर बीमार हो जाता है, उसी प्रकार देश के एक राज्य का प्रगति की दौड़ में पिछड़ना पूरे देश की प्रगति में घातक सिद्ध होता है. इसी कारण पश्चिम बंगाल के मतदाता, कार्यकर्ता, माताऐं-बहनें-बेटियाँ बहुत आदर के पात्र हैं जिन्होंने समय रहते सटीक निर्णय कर राज्य की बागड़ोर नरेन्द्र मोदी को सोंप कर न केवल पश्चिम बंगाल को बर्बादी से बचा लिया बल्कि विकसित भारतश्च 2047 व 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए खुले दिल से अपना सहयोग, समर्थन व आशीर्वाद प्रदान किया. अब नरेन्द्र मोदी की जिम्मेदारी इस विश्वास को पूरा करने के लिए और भी अधिक बड़ गई है. आने वाली राज्य सरकार को जनता की भावनाओं, अपेक्षाओं व विश्वास को केन्द्र मे रख कर बिना थके-बिना रुके चहुमुखी विकास के लिए अत्यधिक प्रयास करने होंगे.

2-3 विधायकों वाली पार्टी 77 विधायकों तक पहुंचती है, फिर सीधे 207 विधायकों पर पहुँचती है. ऐसी स्वीकार्यता में बढ़ोत्तरी क्यो? राजनैतिक विश्लेशकों का उत्तर भी बहुत स्पष्ट है व बहुत आसान है -कि एसआईआर के कारण 90 लाख से अधिक घुसपैठिये मतदान प्रक्रिया से बाहर हो गये, सनातन का विरोध कर ध्रुवीकरण करने के प्रयासों से आम मतदाता चिढ़ गया था, आतंक, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, गुण्डागर्दी, महिलाओं के प्रति अपराधों का बड़ता ग्राफ, बेरोजगारी, तुष्टीकरण व भविष्य अंधकारमय देख रहा था आम मतदाता. केंद्रीय बलों की उपस्थिति के कारण आम मतदाता वोट डालने का साहस कर पाया, इत्यादि, इत्यादि ...पर एक और अति महत्वपूर्ण तर्क भी मतदाताओं को शांत नहीं बैठने दे रहा था, वो था, ममता सरकार में पश्चिम बंगाल मोदी सरकार के विकसित भारतञ्च 2047 व 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की दौड़ में शामिल नहीं हो रहा था, और अगर सरकार न बदली होती तो पश्चिम बंगाल भविष्य में भारत के नक्शे पर गरीब, बीमारू व उन्नति के पैमाने पर मार्ग के किनारे पर दुखी, लाचार सा खड़ा मिलता, बच्चों का भविष्य क्या होता, बच्चों को रोजी-रोटी की तलाश में देशभर में भटकना पड़ता और बेरोजगारी दर बढ़ते ही अपराध चरम पर पहुँच जाता अर्थात राज्य का आर्थिक ढांचा चरमराते ही भविष्य अंधकारमय हो जावेगा.

(लेखक भाजपा मप्र के कोषाध्यक्ष हैं.)

भारत की जलविद्युत योजनाओं में पाक का अड़ंगा

सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद से पाकिस्तान ने अक्सर शिकायत करने की रणनीति अपनाई है, ताकि भारत की परियोजनाओं में विलंब हो. समाधान के बजाय उसने बाधा को अपना हथियार बना लिया है. पश्चिमी नदियों पर भारत की लगभग हर जलविद्युत परियोजना पर पाकिस्तान आपत्ति दर्ज करता है. संधि के अनुसार जिन परियोजनाओं को अनुमति मिल चुकी है, उन्हें भी वह तकनीकी रूप से चुनौती देता है. यही वजह है कि कई परियोजनाएं आगे न बढ़ सकीं और इनके लिए मजबूर होकर मध्यस्थता का सहारा लेना पड़ा. बगलिहार, किशनगंगा, पाकल दुल और तुलबुल सहित सभी परियोजनाएं लंबे समय से पाकिस्तानी चुनौतियों का सामना कर रही हैं. भारत ने हमेशा संधि के नियमों का पालन किया है और पाकिस्तान ने उसकी इसी बात का फायदा उठाया है. उसने एक ऐसी कहानी पेश की है, जिसमें भारत को नकारात्मक रूप से चित्रित किया गया है. उसकी इस कहानी में भारत को 'जल आक्रांता' के रूप में दर्शाया गया है. पाकिस्तानी अधिकारियों, शिक्षाविदों और राजनयिक अधिकारियों ने बार-बार यह दर्शाने की कोशिश की है कि भारत पानी का उपयोग पाकिस्तान के खिलाफ एक हथियार के तौर पर कर सकता है. पाकिस्तान ने अपनी इस कहानी का उपयोग भारत पर कूटनीतिक दबाव बनाने के लिए किया है. इस वजह से वैध संधि अधिकारों के बावजूद भारत अपनी पूर्ण क्षमता का सीमित ही उपयोग कर पाया है. भारत ने संधि का एक बार भी उल्लंघन नहीं

किया है न तो 1965 के युद्ध के दौरान, न ही 1971 के युद्ध के दौरान, न ही 1999 के कारगिल संघर्ष के दौरान. इस संधि की सीमाओं का सिंधु बेसिन में भारत के विकास पर स्पष्ट और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा है. राजस्थान और पंजाब के विशाल क्षेत्र, जहां सिंचाई की जा सकती थी, आज भी शुष्क हैं या वैकल्पिक, अधिक महंगे जल स्रोतों पर निर्भर हैं. जम्मू और कश्मीर पर इसका गंभीर असर हुआ है. यह केंद्र शासित प्रदेश पश्चिमी नदियों के किनारे बसा है और इसमें अपार, लगभग अप्रयुक्त जलविद्युत क्षमता मौजूद है. संधि की रूपरेखा संबंधी प्रतिबंधों, पाकिस्तान की आपत्तियों के कारण इस क्षमता का विकास हर कदम पर बाधित है. पश्चिमी नदियों की जलविद्युत क्षमता का सर्वोत्तम उपयोग करने में भारत की असमर्थता का सीधा असर राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा पर पड़ता है.

-पीके सक्सेना, पूर्व भारतीय आयुक्त सिंधु जल

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बीजेपी की रणनीति का असर विपक्षी पार्टियों पर टूटा कहर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, चुनाव जीतने वाले नेता पार्टियां दे रहे हैं. वही पार्टी सफल मानी जाती है, जो देर रात तक चलती है. लोग खाते-पीते और तेज म्यूजिक पर डान्स करते हैं. आपने गीत सुना होगा- '4 बज गए हैं, लेकिन पार्टी अभी बाकी है.' पार्टी से टुन्न होकर निकलने वालों की ताक में पुलिस तैनात रहती है ताकि ड्रंक एंड ड्राइव के तहत उस पर कार्रवाई की जा सके. इसलिए रात की गीली पार्टी में अपने साथ ऐसे व्यक्ति को ले जाना चाहिए जो टी-टोटलर हो अर्थात नशा-पानी न करता हो. गाडी उसे ही चलाने देनी चाहिए. एक कहावत है- पार्टी बेवकूफ लोग देते हैं और समझदार लोग उसका आनंद उठाते हैं. आम तौर पर परीक्षा में पास होने, नौकरी लगने, प्रमोशन होने पर पार्टी दी जाती है. आपका पार्टी के बारे में क्या विचार है?'

हमने कहा, 'अपनी निगाह होटल, रेस्टोरेंट, क्लब या लॉन में दी जाने वाली पार्टी तक सीमित मत

रखिए. हमारा भारत पार्टियों की तादाद के मामले में भी महान है. देश में 2,585 रजिस्टर्ड पार्टियां हैं, जिनमें से 8 राष्ट्रीय स्तर की पार्टियां हैं जिनकी अनेक राज्यों में मौजूदगी है. 54 राज्यस्तरीय क्षेत्रीय पार्टियां हैं. बाकी पार्टियों में कोई दम नहीं है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इस समय तो बीजेपी विपक्षी पार्टियों का दम निकाल रही है. आम आदमी पार्टी के 7 राज्यसभा सदस्य फोड़कर केजरीवाल की झाड़ू के तिनके बिखेर दिए. पिछले चुनाव में ममता का पैर टूटा था. इस बार उनकी पार्टी का टिनपाट बजा दिया. विपक्ष मुक्त भारत की दिशा में कदम बढ़ाए जा रहे हैं. तमिलनाडु में युवा पीढ़ी रामास्वामी पेरियार की द्रविड़ विरासत को भूल गई. एमजीआर और जयललिता की रोमांटिक मूवी भी उसने नहीं देखी. उसे करुणानिधि की करुणा याद नहीं आई. रूस का तानाशाह जोसेफ स्टालिन और तमिलनाडु का हिंदी विरोधी स्टालिन भी इतिहास में चले गए. अब विजय की पार्टी ही विजय का जश्न मनाएगी.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12252 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	
6		■	7	8			■
9		10		■	■	■	11
■	■		■	■	12	13	
14			15	■	16		
	■	17		18		■	■
	■		■	19		20	21
22		■	23		■	24	

ऊपरे से नीचे

1. अंक, संख्या 2. हवा, वायु, कुम्हार का आवां 3. स्वेद, परिश्रम या गर्मी के कारण शरीर से निकलने वाला पानी 4. शीघ्र, तुरंत (सं.) 5. देश 8. समाना 10. मध्य में, बीच में 11. दर्पण 12. सितार की तरह का एक बाजा जिसमें केवल एक तार होता है 13. एक घास, खांसी 14. किसी को मरने से बचाना 15. कुचले जाने का शब्द 18. सौगंध, शपथ 20. प्राचीन फारसी कथाओं की वे कल्पित सुंदर स्त्रियां जिनके कंधे पर पंख लगे होते थे, परम सुंदरी स्त्री 21. किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाला शब्द, यश, कीर्ति, संज्ञा

बाएं से दाएं

1. कुरूप, भद्दा (सं.) 4. प्रस्तावना (सं.) 6. जंगल, वन, अग्नि, दावानल, पीड़ा, ज्वर (सं.) 7. वह शुल्क जो देश के बाहर से आयात होने वाले या बाहर जाने वाले पदार्थों पर लगता है, कस्टम ड्यूटी 9. दन-दन शब्द सहित 12. एकांक, एक का मान 14. आरंभ का, पहले का 16. बंधन या तनाव कड़ा करना, दूध को गाढ़ा करके खोवा बनाना 17. भीख मांगने का कार्य या भाव 19. शाप देना, कोसना 22. सरिता 23. अर्जुन का छोटा भाई, बहुत बड़ा 24. कागज की वह गड्डी जिसमें बीस दस्ते हो

Solution 12251

सा	नि	या	मि	र्जा	■	र	ज
द	ना	द	न	■	वि	मा	न
र	द	■	क	न	क	ना	ना
■	न	म	ना	■	ट	■	य
य	■	क	■	मा	■	ने	क
शो	ए	ब	म	लि	क	■	■
ध	■	रा	■	का	■	सा	ग
रा	स्ता	■	अ	ना	व	र	ण

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष केप्रारंभ में कार्यो की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख प्राप्त मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से समाज में प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी केकारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि की प्राप्ति होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की नई योजना पर विचार विमर्श होगा, कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंकी आर्थिक उन्नति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, दुबला, पतला, किन्तु लबे कद का होगा, इनकी शिक्षा अच्छी होती है, लेखन अध्ययन कार्य में सफ्लता मिलेगी, आय के एक से अधिक साधन रहेंगे, नौकरी में सफ्लता प्राप्त होगी, दायित्वों की पूर्ति होगी, माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

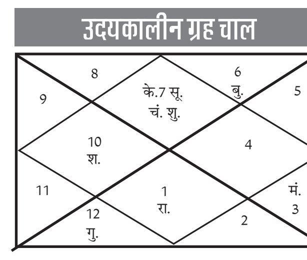

मेष- जीवनसाथी की मदद से मुश्किल राह आसान होगी, बुजुर्गो का ध्यान रखें, सुख ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति हो सकती है, प्रवास का योग है.

वृषभ- सामाजिक जीवन में बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी, प्रियजन की मुलाकात सुखद रहेगी, शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति होगी, जमीन जायजाद का सुख मिलेगा.

मिथुन- आफ्सि के कार्यो की अधिकता रह सकती है, आवेश में फैसला गलत होगा, विरोधी पक्ष के कारण थोड़ी परेशानी हो सकती है.

कर्क- मित्रों के साथ समय मौजमस्ती में बीतेगा, माता पिता से सहयोग मिलेगा, पारिवारिक जीवन सुखद एवं आनन्ददायक रहेगा, लाभ का योग है.

सिंह- भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी, प्रियजन की मदद से कार्य पूरे होंगे, लंबित कार्यो को पूरा करना ही हितकर रहेगा, अनावश्यक व्ययभार न बढ़ायें.

कन्या- मधुरवाणी से सबका दिल जीत लेंगे, प्रापर्टी का विवाद हल होगा, धार्मिक कार्यो में यश-मान सम्मान मिलेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

तुला- तरक्की का अवसर है, जिसे आप चाहते हैं, उससे मन की बात कह दें, नौकरी में सफ्लता प्राप्त होगी, शुभ समाचार मिलने का योग है.

वृश्चिक- अनुभवी लोगों का साथ सुखद रहेगा, कार्यो को इच्छित सफ्लता प्राप्त होगी, सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा, राजकीय सहयोग से शत्रु बाधा दूर होगी.

धनु- घरेलू कार्य पूरा करने में व्यस्त रहेंगे, कार्यस्थल पर माहौल अनुकूल रहेगा, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, सामाजिक कार्यो में रूचि रहेगी.

मकर- बातचीत में सावधानी रखें, धैर्य से काम लें, अनावश्यक खर्च से चिन्ता होगी, किसी उत्सव में शामिल होने का योग है, मनोरंजन के कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

कुम्भ- जीवनसाथी की भावनाओं पर ध्यान दें, पुराना विवाद पक्ष में सुलझेगा, पारिवारिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा.

मीन- योजना लागू करने का सही समय है, नये संपर्कों से लाभ होगा, आकस्मिक धन लाभ का योग है, पारिवारिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमीं शनिवासरे दिन 9/28, श्रवण नक्षत्रे रात 7/18, शुक्ल योगे रात 10/53, वव करणे सू.उ. 5/26, सू.अ. 6/34, चन्द्रचार मकर, शु.रा. 10, 12, 1,4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमीं को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, नारियल, सुपारी, मेवा, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, व शेयर के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 2499 है.

SUDOKU 7384

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7383

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7